आपातकाल में सृजन फुलवारी

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अजय पाण्डेय बेबस

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-156-5

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, अजय पाण्डेय बेबस

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY AJAY PANDEY BEBAS

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	किसान	6
2.	प्रलय	7
3.	मदद	8
4.	सृजन	9
5.	पाप-पुण्य	10
6.	जीवन	11
7.	परमात्मा	12
8.	आँखें	13
9.	लम्हा	14
10.	स्त्री	15
11.	राजनीति	16
12.	काल	17
13.	भ्रूण हत्या	18
14.	उन्मुक्त	
15.	संयम	
16.	मुक्तक	

किसान

भले ही जय जवान, जय विज्ञान हो आज।।
पर जय किसान बिन कोई कल्याण नहीं आज।।

भर पेट हो भोजन तो विज्ञान और जवान।
अन्नदाता वही किसान पहला भू भगवान।।

आज महामारी की इस आफत में किसान ही आया काम में।
उपजा कर अन्न देश को देता रहा मेहनत से कम दाम में।।

जरूरत है धरती के इस भगवान की भी पूजा हो।
शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ फसल की बीमा हो।।

किसानों के हृदय में बसी खुशियाँ हमें हंसाएगी।
उनके भी बच्चे हैं जिनका जीवन भी मुस्कुराएगी।।

प्रकृति के संग चलने वाले ये हमेशा के सिपाही हैं।
किसानों की समृद्धि में ही देश की वाह-वाही है।।

बेबस न रहे इनकी कामना में ही सबका मंगल है।
आम जन जीवन में किसान ही चाहते सबका सुमङ्गल है।।

प्रलय

प्रलय जो नाम सुना था वह आज देख ले।
प्रकृति क्या कहती इंसानों को वो समझ ले।।

इंसान नहीं बलवान रहा किसी भी युग में।
सतयुग या द्वापर युग! या कहिये इस युग में।।

प्रकृति ही भगवान और प्रकृति ही करे कल्याण।
प्रकृति विरुद्ध मानव जीवन रहे सदा निष्प्राण।।

दूषित कर पर्यावरण को हम चले थे विकास देखने।
यही उच्चत्तम विकास का सोच से स्वास लगे टूटने।।

अब भी वक्त है प्रकृति से उलट चलना बन्द हो।
बेबस तब नहीं जीवन में रहना सब स्वछंद हो।।

मदद

मानव जीवन की असमानता।
अमीर-गरीब बीच विभिन्नता।।

मदद को हाथ आगे आए आज।
दिखता नहीं कुछ यह!वह समाज।।

भाव नहीं प्रियता का इस जगत।
स्वार्थ में जीवन तो क्या आवभगत?

सोच यह मानव का मानवीयता में नहीं।
हर आफत की कड़ी में शामिल वही।।

क्या भला सोचे कोई आज यहाँ में।
छल-प्रपंच से बसी हो दुनिया जहां में।।

बेबस यह मन सोचता रहता नए राह के लिये।
देख मानवीय कुटिलता में जग-परवाह के लिये।।

सृजन

सत्य यह सृजन प्रकृति में।
आह्लादित जीव प्रवृति में।।

अनवरत सृजन का उल्लास।
प्रकृति जाने जीवन मिठास।।

प्रकृति का नहीं आपातकाल।
मुस्कुराए यह हर पल!हर हाल।।

स्थिर आकृति में स्थिर कृति।
भाव शून्य नहीं इसकी वृति।।

फलों और फूलों में जीवन।।
जाने कर्म अपन यह आजीवन।।

बेबस हम!कि हम नहीं जानते।
प्रकृति के विरुद्ध रहना चाहते।।

पाप-पुण्य

प्रकृति विपदा में लोग भूल गए हैं।
लूट-खसोट में जीवन समझ गए हैं।।

जिनके हाथ लाठी! जमाना उन्हीं का।
भूल गए लोग कोप आज प्रकृति का।।

वक्त जब करवट लेता है तो सब बदल देता है।
पाप का नाश कर पुण्य का सृजन कर लेता है।।

पाप और पापी की दुनिया लम्बी होती नहीं।
लोग जानें यह बात आज में लोगों से निभती नहीं।।

इंसानों की कुटिल चलन से आज जग परेशान है।
बेबस लोगों बीच शान से जी रहे आज शैतान हैं।।

जीवन

जीवन! औरों के जीवन से आश्रित है।
फल-फूल और अनाज निहित है।।

बिना और जीवन के! इंसानों का वजूद नहीं।
बनाया यह सब सृष्टि ने! इंसान खुद नहीं।।

अहम को मन रख चल रहा आज इंसान।
कमजोर किसी जीव पर चाहे होना भगवान।।

इंसानों के इस कुकृत्य का परिणाम है।
हर पल खुशियों के लिए तरसे आज है।।

बेबस नहीं और कोई जीव! जितना इंसान है।
खैर कि प्रकृति चाहे नहीं मिटे जीवों के जहान है।।

परमात्मा

आत्मा के ऊपर परमात्मा।
परमात्मा सत्य और सुंदर।।

हो स्मरण नित परमात्मा में।
जगत जीवंत और रहे सुंदर।।

सभी जगत के प्यारे जीव में।
मानव जीवन सबसे सुंदर।।

जानो अपना जीवन आज में।
बनाए चलो जगत को सुंदर।।

बेबस न मानव रहे! और न रहे यह युग।
हर युग हो चले मानव सोच से सुंदर।।

आँखें

सृष्टि कितनी सुंदर है।
देखने को मिली आँख।।

इन आँखों से देखे लोग।
जिस काम से है आँख।।

आँख रहते कई अंधे लोग।
धोखे में रखते अपनी आँख।।

सत्य को तरसता यह जीवन।
देख सत्य भी बंद रखते आँख।।

मेरा ही भला हो के चक्कर में।
आँख रहते हुए भी हैं बिन आँख।।

बेबस दुनिया को मिला सब कुछ में।
दुनिया को झुठला चलते रख अपना आँख।।

लम्हा

आज का लम्हा बीते काल के लम्हों से बेहतर नहीं।
ईर्ष्या-द्वेष से ग्रषित लोगों में एक दूसरे के बीच पहचान नहीं।।

आने वाला हर लम्हा आशंकाओं को लिये दिखता है।
दिवा स्वप्न कहें इसे या सत्य! पर डर बहुत लगता है।।

प्रवृति लोगों की, मानवीयता को खो चली है।
सरल जीवन आज कुटिलता की राह चल पड़ी है।।

कौन अपना कि कौन पराया में, आज दुनिया धोखे में है।
हर पग पर अमानवीयता का ख़ंजर लोगों के दिल में है।।

बेबस यह दिल रोता है जो हाल देश के अंदर है।
आरोप-प्रत्यारोप बीच में जीवन लगता बवंडर है।।

स्त्री

स्त्री सृष्टि का मूलाधार है।
पवित्र रूप में संसार है।।

आह्लादित स्त्री से दुनिया है।
रोये तो सर्वनाश तय है।।

मान है! जगत का अभिमान है।
माता-पुत्री के रूप में शान है।।

मर्यादित जीवन इसका स्वाभिमान है।
स्त्री मान में ही विश्व मानव का कल्याण है।।

बेबस होकर रोये न स्त्री कहीं भी में।
सबके जीवन को मिलेगा मान है।।

राजनीति

राजनीति कम! कूटनीति ज्यादा है।
हर एक दूसरा इंसान प्यादा है।।

न जाने राजनेताओं का होता क्या इरादा है।
पक्ष-विपक्ष होकर अपना हित ही साधा है।।

भला सोचते दिखते सभी नेता सरकार!आम जन का।
पर होता कहाँ भला! जो जीवन दिखता!आम जन का।।

भुलावे की जन नीति और जन सरोकार।
बस वायदे की बोली में रहे सभी सरकार।।

भरोसे की फ़टी चादर लिए काम में किसान।
तक हार कर पूछे!कहाँ हैं मेरा भगवान।।

काल

काल के घेरे में आज का मानव है।
काल ही मानव को बना रहा दानव है।।

भूल रिश्ते-नाते!अपना हित फ़रियाने लगे हैं।
दानवी सोच से अपनों को गरियाने लगे हैं।।

मान नहीं स्त्री-पुरुष बीच!दिन वह गुजारने लगे हैं।
पशुवत हो जिंदगी से विमुख दिन बिताने लगे हैं।।

सभ्यता-संस्कृति के सुंदर रूप अब भूलने लगे हैं।
शिक्षित होकर भी भेंड़-बकरियों का चाल रखने लगे हैं।

न जाने किस बात की विवशता है आज जो ऐसा करने लगे हैं।
कर्महीन जीवन की विष भरी थैली में संजीवन बूटी ढूँढने लगे हैं।।

भ्रूण हत्या

मसनवीय जीवन में आज अराजकता है।
पवन नहीं जीवन जहाँ में कई निमन्नता है।।

असमय झेल रही बालाएं प्रेम का पाप।
असत्य कर्म में जीवन नहीं उनका निष्पाप।।

पाँव में दिखता नहीं आज सँस्कार का बंधन।
छूट रहा सँस्कार उनसे में बढ़ा रहा आज क्रंदन।।

बिन ब्याही माँ बनने की होड़ में भ्रूण हत्या।
भूल चलीं आज की बलाएँ शर्म और हया।।

बेबस हो चले दिखते आज के माँ और बाप।
दृष्टिहीन दिल भी कांप रहा सुन यह पाप।।

उन्मुक्त

उन्मुक्त नहीं हमारा जीवन! जैसे उन्मुक्त रहते पंछी।
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर आज हावी राजनीति ओछी।।

जात-प्रजात में बंटा हो जहाँ समाज आज यहाँ।
एक जात दूसरे जात को पूछे यह बात है कहाँ?

अनेकता में एकता की बात आज कहने के लिए।
बाँट लिया हो धर्म जहाँ आज अलग रहने के लिए।।

भूल चुके मानव धर्म में प्रायोजित धर्म का बोलबाला है।
रोज होता धर्म का वाक युद्ध से गले उतरता नहीं निवाला है।।

क्या होगा उन गरीबों का जिनका धर्म पेट भरना है।
बेबस वो मजदूर है जो जाने!रोज के धर्म में कर्म करना है।।

संयम

आज का मानव संयम की परिभाषा नहीं समझता।
मानव की इसी नासमझी से जीवन में शांति नहीं रहता।।

संयम की परिभाषा समझ ले तो धन्य हो जाए जीवन।
युद्ध औऱ आपसी कलह से दूर मानव देखे तब सुंदर जीवन।।

संयम और धैर्य मानव जीवन का सबसे बड़ा अस्त्र है।
हो जो यह संयम की लाठी जिनके हाथ!विजयी वह सर्वत्र है।।

उतावलेपन में लिया गया कोई भी निर्णय सफल नहीं रहा है।
संयम और धैर्य से हुआ निर्णय में मानव हमेशा विजयी रहा है।।

विवशता की आए घड़ी तो संयम को साथी बना ले जो कोई।
हर कठिन से कठिन घड़ी में वह जरूर सफल होता रहा है।।

मुक्तक

महामारी

गन्दगी! महामारी का कारण।
यूँ ही आती नहीं यह अकारण।।
हमारी सोच ही बीमारी का घर।
फेंकते जो कचड़े खुले में! बनते कारण।।

खामोशी

सौ दवा की एक दवा खामोशी है।
खामोश रह संकटों में ढूंढें खुशी है।।
यूँ हर बात पर चिल्लाते रहने से क्या मिलता।
आए क्रोध मन मस्तिष्क में तो इलाज खामोशी है।।

कर्म

कर्म से नाम है यह बात जरूर जानिए।
हो जगत में नाम!कर्म सुन्दर करिए।।
कर्महीन और कुकृत्य के कहीं भी मान नहीं।
हो जाए नाम अमर!अमर वह काम कीजिए।।

मुसाफ़िर

हम सब बस एक मुसाफ़िर हैं।
चलते रहे जीवन का राहगीर हैं।।
रुक जाए जो धड़कन तो अंत जीवन का मानिए।
हो कर्म अच्छा! जान यह कि जीवन नहीं स्थिर है।।

परिवार

परिवार क्या है! आज इसे जानिये।
संकट के पल परिवार! बात मानिये।
पूरा विश्व आपका परिवार हो आज में,
पारिवारिक स्नेहशाला बनाते चलिये।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

अजय पाण्डेय 'बेबस'

ग्राम-चेटर, पो.-गुमला, जिला-गुमला
झारखण्ड, पिन-८३५२०७
Email- ajaypandey279149@gmail.com
Mobile - 9973101940, 9110195018

विभिन्न विभीषिकाओं/महामारियों जैसे आपातकालीन स्थिति से हमारा देश और पूरा विश्व त्राहिमाम कर समस्याओं से निबटने में लगा हुआ है।। 'अन्तराशब्दशक्ति' इस भीषण आपातकालीन परिस्थिति में भी अपनी ऊर्जा को बनाये रख सृजन कार्य में लगा हुआ है।

आम जन के हित के साथ-साथ देश की स्मिता को बचाये रखने के लिए शब्दों की माला को कविता और कहानियों को प्रकाशित करने का सराहनीय कार्य करता रहा। अन्तरा शब्दशक्ति अपने आप में एक मील का पत्थर है जो आफत की घड़ी में भी जनमानस के हितार्थ हर काम को तत्परता से लेकर चल रहा है।

मैं अन्तरा शब्दशक्ति का साधुवाद करना चाहूँगा कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन/संस्था की साहित्यिक सोच देश और समाज के लिये हितकारी साबित होता रहेगा।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-156-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/